International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 1; January 2016; Page No. 50-51

श्री मध्वाचार्य जी द्वारा प्रतिपादित द्वैत वेदान्त

डॉ0 अखिल सिंह

सहायक महाप्रबंधक – प्रशासन, विक्रांत सैफ गार्ड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नौएडा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

श्री मध्वाचार्य जी का जन्म दक्षिण भारत में उडुपी नामक स्थान के पास सन् 1199 ई0 में इनका जन्म तथा सन् 1303 ई0 में इनकी मृत्यु हुई।[1] वैदिक साहित्य के वे अपूर्व पण्डित थे। स्वभाव से विरक्त होने के कारण मध्वाचार्य जी भी शीघ्र ही शंकर की तरह से संन्यासी हो गये। कई वर्षों तक मध्वाचार्य जी ने योगाभ्यास की क्रियाओं में व्यतीत किए। मध्वाचार्य जी रामानुज के शिष्य थे लेकिन उनके मत से अरूचि रखते थे।[2] मध्वाचार्य जी द्वैतवाद को मानते थे और इन्होंने उडुपी नामक स्थान पर ही कृष्ण मंदिर की स्थापना की और यही मन्दिर इनके अनुयायियों के संगठन का एक केन्द्र बन गया। माध्वाचार्य जी ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि यज्ञों में किसी भी प्रकार की हिंसा न की जाए और इनका ब्रह्मसूत्रों पर द्वैतपरक भाष्य बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस भाष्य की पुष्टि के लिए ''अन्वय–आख्यान'' नामक एक और पुस्तक लिखी गई जो वस्तुतः अनुपम है।[3]

मध्वाचार्य जी के द्वारा 37 ग्रंथों का लेखन किया गया, जिसमें से प्रसिद्ध ग्रंथ निम्नलिखित हैं:–[4]

(1) ब्रह्मसूत्र–भाष्य
(2) अनुव्याख्यान (सूत्र की अल्पाक्षरा वृत्तिः जिस पर 'न्यायविवरण' स्वयं आचार्य ने, 'न्यायसुधा' जयतीर्थ ने तथा न्यायसुधा की परिमल नाम्नी टीका राधवेन्द्र यति ने लिखी है।)
(3–7) ऐतेरय, छान्दोग्य, केन, कठ, वृहदारण्यक आदि उपनिषदों पर भाष्य
(8) गीताभाष्य
(9) भागवत तात्पर्यनिर्णय (टीका–यदुपति की)
(10) महाभारत–तात्पर्यनिर्णय
(11) विष्णुतत्वनिर्णय
(12) प्रपञ्चमिथ्यात्वनिर्णय
(13) गीता तात्पर्यनिर्णय
(14) तन्त्रसार संग्रह

श्री मध्वाचार्य जी के मत में ज्ञान के तीन साधन है– (1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान और (3) आगम। प्रत्यक्ष तथा अनुमान प्रमाण के द्वारा इस संसार की समस्या को हल नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रत्यक्ष केवल उसी का हो सकता है जो इन्द्रियों का विषय हो। अनुमान प्रमाण भी उन्हीं वस्तुओं पर आश्रित है, जो कभी पहले प्रत्यक्ष हो चुकी हों। ब्रह्मज्ञान, आत्मा का यथार्थ बोध तथा प्रकृति के स्वरूप का ज्ञान ये सब आध्यात्मिक समस्याएँ आगम प्रमाण पर आश्रित हैं अर्थात् इनको हल करने के लिए वेदों का आश्रय लेना आवश्यक है। मध्वाचार्य जी के मत में केवल वेद ही अपौरूषेय तथा निर्भान्त है। आध्यात्मिक समस्याओं का एकमात्र हल वेद–द्वारा ही सम्भव है।

मध्वाचार्य जी पाँच भेद नित्य मानते हैं:[5]
(1) ईश्वर और जीव में
(2) एक जीव का दूसरे जीव से
(3) ईश्वर और जगत् का
(4) जीव और जगत् का
(5) एक जड़ पदार्थ का दूसरे जड़ पदार्थ से।

मध्वाचार्य जी के अनुसार इन पंचविध भेदज्ञान से ही मुक्ति होती है।

आचार्य मध्व जगत् को ब्रह्म का विशेषण अथवा शरीर न मानकर ब्रह्म और जगत् की पृथक्–पृथक् सत्ता मानते हैं। द्वैतवादी आचार्य मध्व जीव और जगत् को मिथ्या न मानकर सत्य सिद्ध करते हैं। इस प्रकार ब्रह्म, जीव एवं जड़ जगत् में अभेद न मानकर भेद सिद्ध करना ही मध्व–दर्शन का प्रमुख वैशिष्टय है।[6]

ईश्वर के सम्बन्ध में मध्व का विचार है कि परमात्मा वेदों द्वारा जानने योग्य है।[7] अतः ईश्वर के स्वभाव को अपरिभाष्य नहीं कहा जा सकता। माध्वाचार्य का कथन है कि परमेश्वर की अवाच्यता का यही आशय है कि उसका पूर्ण ज्ञान होना कठिन है।[8] ब्रह्म को मध्व ने विष्णु का रूप प्रदान किया है। विष्णु ही संसार पर पूर्ण रूप से शासन करते हैं। वे तो संसार के सृष्टा एवं सहर्त्ता हैं। इसके अतिरिक्त मध्व, विष्णु को सभी जीवों का अर्न्तयामी मानते हैं।[9] विष्णु संसार के कल्याणार्थ मत्स्यादि रूप से अवतार ग्रहण करते हैं। विष्णु के समस्त अवतार पूर्ण हैं।[10] परन्तु मध्व ईश्वर को उपादान कारण न मानकर निमित्त कारण ही मानते हैं। मध्व जी का कहना है कि जो ईश्वर ज्ञान स्वरूप है उससे जड़ जगत् की उत्पत्ति किस प्रकार सम्भव है।[11]

लक्ष्मी परमात्मा की शक्ति है। वह परमात्मा से भिन्न एवं केवल उसी के अधीन है।[12] लक्ष्मी दिव्य शरीर धारिणी होने के कारण अक्षर स्वरूप है।[13] परमात्मा की तरह लक्ष्मी नित्यमुक्ता तथा देश–काल की दृष्टि से परमात्मा के ही समान व्यापक है।[14] परन्तु गुणों की दृष्टि से लक्ष्मी परमात्मा से न्यून ही है। निश्चय ही परमात्मा भिन्ना, नित्यमुक्ता एवं दिव्य शरीर धारिणी शक्ति (लक्ष्मी) का स्वरूप शांकर वेदान्त की ईश्वर–भिन्ना, अज्ञानस्वरूपा और जड़ माया से भिन्न है।

मध्व वेदांत में जीव परमात्मा से भिन्न है तथा समस्त जीव परस्पर एक दूसरे से भिन्न है। परमाणु प्रदेश में रहने वाले जीव अनन्त हैं।[15] समस्त जीवों का आधार परमात्मा है। परमात्मा ही जीवों को उनके पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार कर्म करने के लिए प्रवृत्त करता है।[16] मध्वाचार्य का कहना है कि जीव की स्वप्न कल्पना भी ईश्वर की इच्छा पर ही आधारित है। जीव अणु परिमाण होने के कारण सर्वव्यापक ब्रह्म की सत्ता से पृथक् है।[17] यद्यपि जीव पूर्वकृत कर्मानुसार अज्ञान, मोह, दुःख एवं भयादि दोषों से पूर्ण है। तथापि उसका स्वभाव आनन्द ही है। मुक्तावस्था में जीव अपने मूल स्वभाव आनन्दस्वरूप को प्राप्त हो जाता है।

मध्व वेदांत के अनुसार प्रधानतया तीन प्रकार के जीव बताये गये हैं:–[18]

(1) मुक्ति योग्य जीव
(2) नित्य संसारी जीव
(3) तमो योग्य जीव

मुक्ति योग्य जीवों के अंतगर्त देव, ऋषि, पितृ, चक्रवर्ती एवं उत्तमरूप से पाँच प्रकार के जीव आते हैं। नित्य संसारी वे जीव हैं जो महादुःखादि का भोग करते हुए अपने–अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग, नरक में दैत्य, राक्षस, पिशाच तथा अन्य अधम कोटि के जीव आते हैं।

मध्व के अनुसार प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। ईश्वर, उपादान कारणभूता प्रकृति से अनेकानेक रूपों की सृष्टि करता है। स्वयं ईश्वर प्रकृति के अनेक रूपों में वर्तमान रहता है। इस प्रकार प्रकृति भी परमात्मा का ही रूप है। व्यक्तावस्था में प्रकृति में महत्, अहंकार, मन, दशेन्द्रियाँ, पंचतन्मात्राएँ (शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श) और क्षिति आदि पंचतत्व से चतुर्विंशति तत्व दृष्टिगोचर होते हैं। अव्यक्तावस्था में मूल प्रकृति में ये तत्व सूक्ष्म रूप से वर्तमान रहते हैं। लक्ष्मी अपने श्री, भू एवं दुर्गा रूप के द्वारा त्रिगुणात्मिका प्रकृति की अध्यक्षता करती है। मध्व दर्शन के अनुसार अविद्या प्रकृति का ही रूप है।[19] इस अविद्या के ही जीवाच्छादिका एवं परमाच्छादिका रूप में जीव की अध्यात्मिक शक्ति को आच्छन्न कर लेती है और अपने परमाच्छादिका रूप में परमात्मा को आवृत्त कर लेती है। परमाच्छादिका अविद्या के आवरण के कारण जीव परमात्मा का साक्षात्कार करने में समर्थ होता है।

अविद्या भी प्रकृति का एक रूप है। अविद्या दो प्रकार की होती है, एक वह जो जीव की आध्यात्मिक शक्तियों का नाश करती है और दूसरी वह जो जीवात्मा को ईश्वर से दूर हटाती है। ये दो प्रकार की अविद्या ही इस प्रकृति की वास्तविक उपज है। मध्व ने उन सब प्रयत्नों को निष्फल समझा है, जिनके द्वारा मायावाद का प्रचार हुआ है। उनके मत में यह जगत् मिथ्या नहीं है, न ही जीवात्मा मिथ्या है। जीव और प्रकृति ईश्वर के आधीन अवश्य हैं। उसकी कृपा तथा अनुग्रह से ये सब क्रिया करते हैं।

मध्व के मत में ब्रह्म की प्रसन्नता से बैकुण्ठ की प्राप्ति ही मोक्ष कहलाती है। गुणों के संकीर्तन से भगवान प्रसन्न होते हैं। इनके मत में निर्गुण मुक्ति कभी नहीं होती। मुक्त पुरुषों का आश्रय केवल विष्णु है।[20] मोक्ष के चार प्रकार हैं–[21]

(1) समीप्य
(2) सालोक्य
(3) सारूप्य
(4) सायुज्य

मध्व दर्शन के अनुसार मुक्ति की यह विशेषता उल्लेखनीय है कि मुक्तावस्था में भी जीव सामान्य रूप से आनन्द का अनुभव नहीं करते।[22]

श्री मध्व के मत में सब वस्तुओं का यथार्थ ज्ञान ही ईश्वर का बोध करा सकता है और उसके लिए भक्ति तथा प्रेम पैदा कर सकता है। मोक्ष–प्राप्ति के लिए पवित्र शुद्ध जीवन का होना आवश्यक है। निष्काम भाव से अपने कर्तव्य का पालन करना अनिवार्य है। यह नियम आदि का सेवन एक आवश्यक साधन है। सत्य की जिज्ञासा में निर्मलता बहुत सहायक है। वेदान्त का मनुष्यमात्र अधिकारी है, चाहे वह चाण्डाल ही क्यों न हो। ईश्वर के साक्षात् करने का साधन ईश्वर कृपा से ही उपलब्ध होता है। ईश्वर तक पहुँचने के लिए वायु देवता की सहायता लेनी आवश्यक है। जब तक ईश्वर की कृपा नहीं होती तब तक मोक्ष नहीं हो सकता। ईश्वर की इच्छा है कि वह जिसे मुक्त करना चाहे उसे मुक्त कर दे। आत्म समर्पण ही एकमात्र साधन है।

जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर बना रहता है जब तक कि उसके प्रारब्ध कर्म समाप्त नहीं हो जाते। जीवन्मुक्ति की अवस्था भी पूर्ण मुक्तावस्था को जाहिर नहीं करती। मुक्ति अवस्था में हमारा ईश्वर के साथ सख्यभाव है, परन्तु एकत्व या ब्रह्मत्व नहीं। श्री हनुमान् और भीम के अनन्तर वायु के तृतीय अवतार भूत मध्वाचार्य के मत का संक्षिप्त परिचय इस पद्य में बड़ी सुन्दरता के साथ दिया गया है।[23]

श्रीमन्मध्वमते हरिः परतरः सत्यंजगत्तत्वतो,
भेदा जीवगणा हरेरनुचरा नीचोच्चभावंगताः।
मुक्तिर्नैजसुखानुभूतिरमला भक्तिश्च तत्साधनं,
ह्यक्षादित्रितयं प्रमाणमाखिलाम्नायैक वेद्यो हरिः।।

मध्व के निम्न नौ सिद्धान्त है, जिन्हें सर्वदा ध्यान में रखना चाहिएः

1. चेतन दो प्रकार के हैं। (क) जीव, (ख) ईश्वर। जीव अनादिकाल से मायामोह के कारण बद्ध है। ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान्, अप्राकृत और स्वतन्त्र है। इसलिए चेतनद्वय में अति प्रशस्त है।
2. जगत् सत्य है।
3. जीव और ईश्वर में भेद वास्तविक है।
4. जीवों का सकल सामर्थ्य भगवदाधीन है।
5. जीवों में परस्पर तारतम्य रहता है।
6. ईश्वर का साक्षात्कार ही जीव का मोक्ष है।
7. मोक्ष का मुख्य साधन अमला भक्ति है।
8. वेदों का मुख्य विषय भगवत्प्राप्ति प्रतिपादन में है।
9. ज्ञान के तीन द्वार हैः– (क) प्रत्यक्ष (ख) अनुमान (ग) शब्द
10. उक्त साधनों से ही सब ज्ञेय पदार्थों का ज्ञान होता है।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय दर्शन, बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ–401।
2. छान्दोग्योपनिषद् – एक अध्ययन, मनुदेव पृष्ठ–22।
3. वेदान्त विज्ञान– गोपाल पृष्ठ–51–52।
4. भारतीय दर्शन, बलदेव उपाध्याय पृष्ठ–402।
5. छान्दोग्योपनिषद– एक अध्ययन, मनुदेव पृष्ठ–23।
6. द वेदान्त, घाटे पृष्ठ–33।
7. ब्रह्मसूत्र, मध्व भाष्य – 3/3/1।
8. ब्रह्मसूत्र, मध्व भाष्य – 1/1/5।
9. ब्रह्मसूत्र, मध्व भाष्य – 1/2/13।
10. छान्दोग्योपनिषद् – एक अध्ययन, मनुदेव पृष्ठ–54 से उद्धृत।
11. द वेदांत, घाटे पृष्ठ–34।
12. मध्वसिद्धान्तसार पृष्ठ–26।
13. लक्ष्मीरक्षरदेहत्वात् अक्षरा । मध्वकृत ऐतरेय भाष्य।
14. छान्दोग्योपनिषद् – एक अध्ययन, मनुदेव, पृष्ठ 54 से उद्धृत।
15. परमाणुप्रदेशेष्वनन्ताः प्राणिराशयः। तत्वनिर्णयः, मध्वाचार्य।
16. ब्रह्मसूत्र, मध्वभाष्य 2/3/41–42।
17. ब्रह्मसूत्र, मध्वभाष्य 3/12/3–5।
18. छान्दोग्योपनिषद् – एक अध्ययन, मनुदेव पृष्ठ–85।
19. ब्रह्मसूत्र, मध्वभाष्य – 1/4/25।
20. दुःखाभावः परानन्दो लिंगभेदः समामतः। तथापि परानन्दो ज्ञानभेदान्तु भिद्यते।। मध्वसिद्धात्तासार पृष्ठ–32।
21. छान्दोग्योपनिषद् – एक अध्ययन, मनुदेव, पृष्ठ–139।
22. आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रतिकूल्यस्य वर्जनम्। रक्षिष्यतीति विश्वासः तथा गोप्तृत्वर्णनम्।। वेदान्तरत्न मंजूषा।
23. भारतीय दर्शन, बलदेव उपाध्याय पृष्ठ–407।